

“आपकी सफलता आपके हाथ”

निबंध प्रश्न-पत्र में 2013 के बाद से परिवर्तन दृष्टिगत होता है-

Trend Analysis by
O. P. CHAUDHARY (IAS-2005 BATCH)
BEST CIVIL SERVANT AWARD – 2011

- 2014 के पूर्व 1 निबंध करना अनिवार्य था परंतु वर्तमान में 2 निबंध लेखन अपेक्षित है।
- निबंध प्रश्न-पत्र दो खण्डों में विभाजित रहता है, जिसमें से प्रत्येक खण्ड से एक-एक निबंध अपेक्षित होता है।
- प्रथम खंड के निबंध की प्रवृत्ति अमूर्त तथा द्वितीय खण्ड में विभिन्न मुद्दा आधारित (Issues Based) निबंध।
- निबंध की शब्द सीमा 1000-1200 शब्द, जो एक उपर्युक्त मानक है।
- प्रस्तुतीकरण निबंध शैली की आत्मा होती है। अतः सही मार्गदर्शन में तथ्य व विश्लेषण से समन्वित अभ्यास करना आवश्यक है जो निर्माण IAS द्वारा आप सभी के लिए उपलब्ध कराई जा रही है।
- दोनों निबंधों के लेखन हेतु 3 घंटे का पर्याप्त समय उपलब्ध होता है।
- निबंध प्रश्न-पत्र कुल 250 अंक के होते जिसमें 130+अंको की प्राप्ति की जा सकती है जो आपकी सफलता को सुनिश्चित करता है गत वर्षों से लगातार तथा इस वर्ष भी निर्माण IAS ने पुनः सिद्ध किया कि कैसे निबंध प्रश्न पत्र में 130+ अंक प्राप्त किया जा सकता है। 2015-16 के परिणामों में टॉपर्स के साथ ही अन्य विद्यार्थियों ने भी निबंध प्रश्न-पत्र में बेहतर अंक अर्जित किए हैं।
- 2014-15 की परीक्षा में **राजेन्द्र पैसिया** व **सावन कुमार** ने निबंध में 140 से अधिक अंक प्राप्त कर सफलता हासिल की। वर्ष 2015-16 की निबंध प्रश्न-पत्र में निर्माण IAS के विद्यार्थी **सुरजीत कुमार** ने प्रथम प्रयास में ही हिन्दी माध्यम से 146 अंक प्राप्त किया है।
- 2013 के बाद टॉपर्स व रिजल्ट में Essay की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण हो गई है। जिसमें 150 तक अंक आए हैं जो किसी भी सामान्य अध्ययन के प्रश्न-पत्र से ज्यादा है। इस वर्ष टॉपर्स में गौरव कुमार (AIR – 31) 153, शैलेन्द्र सिंह इंदौरिया (AIR – 38) 154, गौरव सिंह सोगरवाल (AIR – 46) 144 ने निबंध में अंक प्राप्त किये।
- पुनः 2017 में हमारे संस्थान की साक्षी गर्ग (AIR-350), विजय सिंह गुर्जर (AIR-574), रतनदीप गुप्ता (AIR-767), आदि अभ्यर्थियों ने निबंध में 140+ अंक लाकर निबंध की प्रमाणिकता को सिद्ध किया है।

(कृपया निबन्ध प्रश्नपत्र लिखने से पहले.....)

निबन्ध प्रश्नपत्र की तैयारी क्यों?

दोस्तों प्रत्येक वर्ष होने वाली IAS की मुख्य परीक्षा के अंकों में निबंध प्रश्नपत्र के अंकों अंतिम रैंकिंग में नाटकीय परिवर्तन किया है। आप यदि पिछले वर्षों के टॉप-10 टॉपर्स के अंकों का तुलनात्मक अध्ययन करें तो आप पायेंगे की कई बार उनके कुल अंकों में मात्र 5-10 अंकों का अंतर होता है, लेकिन यदि उनके निबंध के अंकों को देखेंगे तो पायेंगे कि लगभग 30-40 अंकों का अंतर है। अर्थात् यदि पिछले रैंक्स को निबंध में 30-40 अंक आ जाता तो शायद वो टॉप रैंक्स होता।

ऐसे में जिस परीक्षा में 1-1 अंक का इतना अधिक महत्व है, वहाँ यदि किसी प्रश्नपत्र में 30 अंकों की बढ़त मिल जाए तो वह कितना निर्णायक सिद्ध होगी, इसका आकलन आप स्वयं कर सकते हैं।

किसी वैकल्पिक विषय के प्रश्न में 30 अंकों की बढ़त बनाना, अन्य शब्दों में 145 से 165 अंक तक जाना सचमुच टेढ़ी खीर है। वहीं मुझे लगता है कि निबंध प्रश्न-पत्र में 30 अंकों की बढ़त लेना अपेक्षाकृत आसान है।

क्योंकि निबंध लेखन मूलतः एक कला है जिसमें कुछ विशिष्ट कौशल के बल पर हमेशा अच्छे अंक लाए जा सकते हैं। अन्य प्रश्नपत्रों की तरह दिए गए पाठ्यक्रम के हर विषय को अलग-अलग तैयार करने की भी कोई जरूरत नहीं होती। कई विकल्पों की उपलब्धता कुछ चयनित क्षेत्रों की ही तैयारी करके उसी क्षेत्र से निबंध लिखने में हमें सक्षम बना देती है।

इसलिए अब पूरी तैयारी के साथ निबंध प्रश्नपत्र की ओर हमें टूटना है और इसकी तैयारी की एक सटीक रणनीति और योजना बनाती है।

निबंध प्रश्नपत्र का दर्शन (PHILOSOPHY OF ESSAY PAPER)

सिविल सेवा परीक्षा में प्रत्येक प्रश्नपत्र का कुछ विशिष्ट उद्देश्य होता है। संघ लोक सेवा आयोग (UPSC) प्रत्येक प्रश्नपत्र के द्वारा अभ्यर्थी की कुछ विशिष्ट योग्यता को परखने का प्रयास करती है। जैसे वैकल्पिक विषयों में हमारी अकादमिक योग्यता को परखा जाता है, वहीं सामान्य अध्ययन में हमारे आस-पास घटित हो रही घटनाओं के प्रति रुचि एवं जागरूकता को। वैकल्पिक विषय ज्ञान की परीक्षा है वहीं सामान्य अध्ययन प्रबंधन की।

इसी तरह बड़े प्रश्न शब्द सीमा से मुक्त रहते हैं, जबकि छोटे प्रश्न शब्द सीमाओं के दायरे में बंधे होते हैं। अर्थात् बड़े प्रश्न ज्ञान की गहराई का परीक्षण करते हैं वहीं छोटे प्रश्न ज्ञान के विस्तार की।

चूंकि निबंध प्रश्नपत्र में अत्यधिक आजादी दी गई है:-

- पर्याप्त विकल्प दिए गए हैं। 8 में से 2 निबंध लिखना है।
- 2 निबंध के लिए पूरे 3 घंटे का समय दिया गया है।
- दो निबंध जिनकी प्रत्येक शब्द सीमा 1000-1200 हो।

इतनी आजादी का मतलब है कि आपको UPSC का खुला निमंत्रण है कि आप जो कर सकते हैं, करके दिखाइए। वस्तुतः जहाँ भी प्रतिबंध होगा, आप स्वयं को अभिव्यक्त करने में कठिनाई महसूस करेंगे। इसलिए निबंध प्रश्नपत्र को प्रतिबंधों से मुक्त रखा गया है ताकि आपका मौलिक व्यक्तित्व सामने आ सके। अतः आप हमेशा ध्यान रखें कि वस्तुतः यह आपके व्यक्तित्व की परीक्षा है और यह परीक्षण अपेक्षाकृत अधिक अनुभवी व्यक्ति (50+ आयु वर्ग) करेगा। एक श्रेष्ठ प्रशासक से समाज जिस तरह से व्यक्तित्व की अपेक्षा करता है वही गुण आपके निबंध में भी झलकना चाहिए। जैसे:-

- वह संवेदनशील हो।
- मानवीय एवं सामाजिक हित के प्रति समर्पित हो।
- सोचने की दिशा सकारात्मक एवं रचनात्मक हो।
- अपनी कमजोरियों के साथ-साथ अपनी शक्तियों की पहचान रखता हो।
- वह अपने मूल्यों से समझौता किए बिना सबके साथ मिलकर चलने की क्षमता रखता हो।
- वह भाई-भतीजावाद से मुक्त होकर सबके साथ निष्पक्ष व्यवहार करता हो। आदि

UPSC के निर्देश

निबंध प्रश्नपत्र में UPSC लिखित निर्देश देती है कि “उम्मीदवार का विषयवस्तु की पकड़, चुने गए विषय के साथ उसकी प्रासंगिकता, रचनात्मक तरीके से उसके सोचने की योग्यता, विचारों को संक्षेप में युक्तिसंगत एवं प्रभावी तरीके से प्रस्तुत करने की तरफ परीक्षक विशेष ध्यान देंगे।”

Examiner will pay special attention to the candidate's grasp of his material. It's relevance to the specific choosen and to his ability to think constructively and to present his idea concisely, logically & effectively.

अर्थात्

- (a) लिखे जाने वाले विषय पर अच्छी पकड़ हो।
- (b) लेखन विषयवस्तु के साथ प्रासंगिक हो।
- (c) विचार रचनात्मक हो।
- (d) प्रस्तुतिकरण संक्षिप्त, युक्तिसंगत एवं प्रभावी हो।

ये UPSC द्वारा दिए जाने वाले निर्देश हैं। इसलिए इनकी महत्ता निर्विवाद है और इनका पालन यथासंभव अवश्य किया जाना चाहिए। मगर यह भी याद रखें कि लेखन की प्रक्रिया गणितीय गणनाओं से भिन्न है, इसलिए गणितीय सूत्रों की तरह इनका इस्तेमाल न करें। हाँ पूरी कोशिश जरूर हो कि इन पैमानों के करीब से करीब रहा जाए।

तैयारी कैसे करें? प्रविधि (Method)

UPSC के किसी भी प्रश्नपत्र की तैयारी की शुरूआत अनसॉल्वड पेपर (unsolved paper) देखने के साथ करें। निबंध के लिए भी अनसॉल्वड पेपर देखने के बाद अपनी रुचि एवं पृष्ठभूमि के आधार पर निर्णय लें कि किन-किन क्षेत्रों में आप बेहतर कर सकते हैं। न्यूनतम तीन-चार क्षेत्रों का चयन कर लें।

अब आप एक नोटबुक बना लें और चुने हुए क्षेत्रों से संबंधित कोई भी अच्छा आलेख मिले तो उसे जरूर पढ़ें और उस आलेख में आपको प्रभावित करने वाले विशेष तथ्यों, वाक्यों, उद्धरणों, विश्लेषणों, निष्कर्षों आदि को नोटबुक में नोट कर लें। कई चीजें शब्दशः लिखने की भी इच्छा होती है, इन तरह के विशेष वाक्यों को आप शब्दशः नोट कर सकते हैं। इसी तरह यदि आप समाचार सुन रहे हों, कोई कविता या उपन्यास पढ़ रहे हो कोई वाद-विवाद कर रहे हों, विषय विशेष से संबंधित तथ्यों को नोटबुक तक जरूर पहुँचाएं। नोटबुक में पहुँचने का अर्थ है कि आप परीक्षा में उसका उपयोग करने में समर्थ हो रहे हैं, क्योंकि आप नोटबुक में संचित सामग्री को कभी भी दुहरा सकते हैं। परीक्षा करीब होने पर यह विशेष रूप से सहायक सिद्ध होगी।

अब विशेष विषयों के लिए समय की उपलब्धता के आधार पर कुछ पुस्तकों का भी अध्ययन करके उपरोक्त प्रक्रिया पुनः अपना सकते हैं। साथ ही, संबंधित विषयों में भूमिका, उपसंहार आदि को भी तैयार करके अपने नोटबुक में स्थान दे सकते हैं।

इस रणनीति के निरंतर अनुपालन से कुछ दिनों बाद आप महसूस करेंगे कि संबंधित क्षेत्र में आप अच्छी जानकारी रखने लगे हैं। आप यह भी पाएंगे कि उस क्षेत्र से संबंधित कई निबंधों में कुछ सामान्य बिन्दुओं (common points) को शामिल किया जा सकता है।

किन सामग्रियों की मदद लें?

— संस्कृति धर्म विज्ञान मूल्य मूल्योन्मुख शिक्षा, स्त्री, लोकतंत्र, वैश्वीकरण के सांस्कृतिक आयाम नव साम्राज्यवाद का सांस्कृतिक मुखौटा आदि विषयों के लिए—

- आजकल
- कथादेश
- ज्ञानोदय
- साहित्य अमृत
- इतिहास-बोध

आदि साहित्यिक पत्रिकाएं विशेष रूप से सहायक हैं। इनमें से किन्हीं दो-तीन पत्रिकाओं का उपयोग लगातार किया जा सकता है ये आपको साहित्यिक मूल्योन्मुख दृष्टि देते हैं और मेरा अनुभव कहता है कि इस दृष्टि का सिविल सेवा परीक्षा में बड़ा लाभ मिलता है।

इसी तरह,

- जनसत्ता
- राष्ट्रीय सहारा दैनिक

आदि का रविवारीय अंक भी विशेष उपयोगी होता है।

— विषय विशेष से संधित कुछ पुस्तकों का भी समय की उपलब्धता के आधार पर अध्ययन किया जा सकता है। जैसे:-

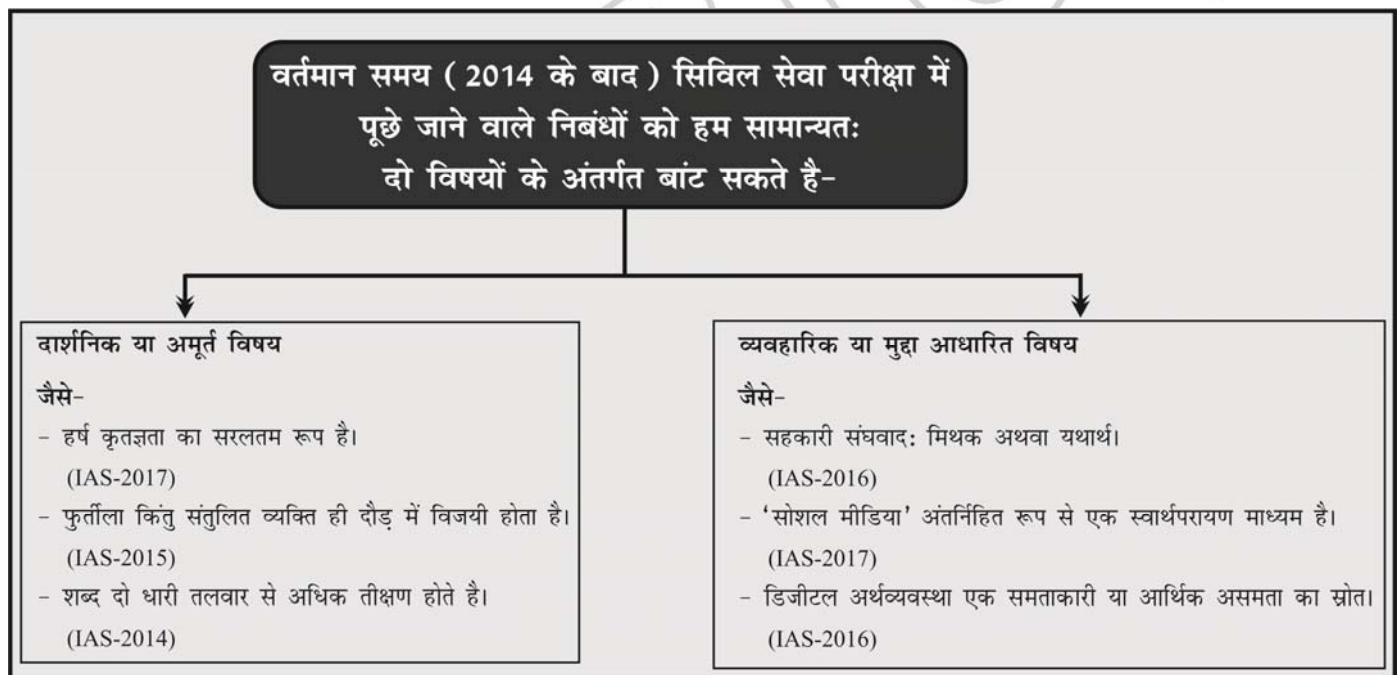
- | | | |
|--------------------------|---|------------------|
| — भारतीय संस्कृति | : | आबिद हुसैन (NBT) |
| — लोकतंत्र के 80 सवाल | : | NBT |
| — द सेकण्ड सेक्स | : | सिमोन-द-बुआ |
| — क्लैसेस आफ सिविलाइजेशन | : | सैमुअल हैटिंग्टन |

- जो अभ्यर्थी समसामयिक विषयों से संबंधित लिखना चाहते हैं, वे हिन्दू आदि दैनिक समाचारपत्रों, योजना, कुरुक्षेत्र फ्रंटलाइन जैसी पत्रिकाओं आदि का भी उपयोग कर सकते हैं।
- अनेक विषयों की दृष्टि से सामाजिक-राजनीतिक दर्शन (दर्शनशास्त्र का पाठ्यक्रम) से संबंधित अध्ययन सामग्री का उपयोग अन्य वैकल्पिक विषयों से संबंधित अभ्यर्थी भी कर सकते हैं।
- इस तरह धर्मनिरपेक्षता जैसे विषयों के लिए धर्म-दर्शन से संबंधित कुछ सामग्री पढ़ा जा सकता है।
- इसी तरह अन्य विषयों की उपयोगी सामग्रियों का भी प्रयोग किया जा सकता है।

किन विषयों की तैयारी करें?

वस्तुतः आज तक आपने जहाँ कहीं जो कुछ भी पढ़ा है उसका श्रेष्ठतम तरीके से निबंध प्रश्नपत्र में उपयोग करना है। इसलिए निबंध की तैयारी करते समय विषयों का चयन करने के लिए अपनी पृष्ठभूमि को जरूर ध्यान रखें। पृष्ठभूमि के अंतर्गत शैक्षणिक पृष्ठभूमि सिविल सेवा परीक्षा में आपके वैकल्पिक विषय, या आपकी रुचि के विशेष क्षेत्र आदि सभी शामिल हैं।

शुरुआती दौर में आप अपनी रुचि एवं पृष्ठभूमि के अनुरूप तीन-चार क्षेत्रों का चयन करके तैयारी कर सकते हैं। कालान्तर में समय की उपलब्धता के आधार पर आप अन्य क्षेत्रों की ओर भी बढ़ सकते हैं।



परीक्षा-कक्षा में प्रवेश करने के बाद

विषय क्या चुने?

आप परीक्षा हॉल में प्रश्नपत्र प्राप्त करके आराम से 10 मिनट में विषय का चयन करें। लाजमी है कि तैयारी किए गए क्षेत्र से निबंध आने पर उसी विषय से संबंधित निबंध लिखेंगे और अगर आपकी किस्मत अधिक खराब नहीं, तो तैयार किए गए तीन-चार क्षेत्रों में से एकाधिक निबंध मिल ही जाते हैं।

अगर तैयार क्षेत्रों में से कोई विषय नहीं पूछा गया है तो सामान्य बुद्धि (common sense) और अपनी विशेष जानकारी के आधार पर आगे बढ़ें।

इस संदर्भ में बड़ा सवाल है कि एकाधिक निबंध की तैयारी होने पर कौन-सा निबंध चुना जाए? वस्तुतः इस प्रश्न का अधिक सामना करना पड़ता है।

इस क्रम में सबसे अहम् सवाल है कि सामान्य विषय (General Topic) का चयन किया जाए या विशिष्ट विषय (specific topic) का? अन्य शब्दों में, जिसे अधिक अभ्यर्थी लिख रहे हैं उस विषय पर लिखा जाए या फिर जिस विषय पर इक्के-दुक्के लोग लिख रहे हों, उस विषय पर लिखा जाए।

यदि आपकी तैयारी एवं अधिकार दोनों तरह के विषयों में बराबर है तो सामान्यतः विशेष विषय पर लिखना चाहिए क्योंकि यह परीक्षक को एक नए विषय का आस्वाद कराएगा और इसका लाभ आपको मिल सकता है।

लेकिन आप गुणवत्ता के साथ कोई समझौता न करें अर्थात् किसी दूसरे सामान्य विषय में आपकी तैयारी अच्छी हो, तो उसे ही लिखें अर्थात् विशेष विषय के प्रति अनावश्यक अंधभक्ति से बचे।

मैं मानता हूँ कि विशेष विषय पर सामान्य गुणवत्ता का निबंध लिखने से अच्छा है कि सामान्य विषय पर विशेष गुणवत्ता से युक्त निबंध लिखा जाए। व्यावहारिक रूप से भी स्त्री, लोकतंत्र, वैश्वीकरण, संस्कृति जैसे सामान्य विषयों पर भी अनेक अभ्यर्थियों के असाधारण अंक आए हैं।

लिखने से पूर्व कितने समय तक सोचें?

सभी स्वीकार करते हैं कि उत्तरपुस्तिका में अंतिम रूप से लिखने से पूर्व, संबंधित विषय पर आराम से विचार करें, मस्तिष्क में आ रहे विचारों को रफ के रूप में उत्तरपुस्तिका में लिखते चले जाए। उसके बाद अंतिम प्रारूप बनाकर, उसके अनुसार लिखते चले जाएं।

लेकिन सवाल है कि लेखन-पूर्व की इस प्रक्रिया को कितना समय दिया जाए?

इस प्रश्न का जवाब हर व्यक्ति के लिए अलग-अलग होगा और एक व्यक्ति विशेष के लिए भी संबंधित विषय में उसकी तैयारी के आधार पर भी यह समय बदल जाएगा।

कई लोगों का जवाब होता है कि एक घण्टा सोचना चाहिए फिर दो घण्टा लिखना चाहिए। इस तरह का जवाब मुझे उपयुक्त नहीं लगता।

बेहतर है कि विषय का चयन करने के बाद संबंधित विचारों को सांकेतिक रूप में रफ में लिख लिया जाए। तब फेयर में लिखना शुरू किया जाए। जहाँ तक आप स्पष्ट हैं वहाँ तक लिखें, फिर बीच में सोचने की दृष्टि से आवश्यकतानुसार रूका जा सकता है। फिर सोचे गए मुद्दे तक आगे लिखें फिर सोचने के लिए आप समय ले सकते हैं और अंत में उपसंहार को रफ में लगभग पूरा लिखकर ही फेयर में लिखें।

मेरा तात्पर्य है कि सोचने और फिर लिखने की रणनीति से बेहतर है सोचना-लिखना सोचना-लिखना की रणनीति।

भूमिका कैसे लिखें?

भूमिका आपके निबंध रूपी महल का प्रवेश-द्वार है। इसलिए इसी महत्ता निर्विवाद है। भूमिका में विषय के आधार तत्व को अभिव्यक्त करना चाहिए। वस्तुतः निबंध यथार्थ से आदर्श तक की यात्रा होना चाहिए। इसलिए भूमिका को यथार्थपरक होना चाहिए। भूमिका लिखने के कई तरीके हैं:-

- (1) निबंध में आगे जो कुछ कहना है, उसका संकेत दे देना।
- (2) जो विषय दिया गया है उससे अपेक्षाकृत बृहद् दृष्टि से शुरू करके उस विषय तक आना। (Macro & Micro : Approach)
- (3) व्याख्यात्मक या सरलीकरण की रणनीति।
- (4) ऐतिहासिक भूमिका।
- (5) यथार्थपरक नाटकीय शुरूआत।

(भूमिकाओं की ये शैलियाँ उदाहरणों से ही स्पष्ट हो सकती हैं। अतः हर तरह की भूमिकाओं से संबंधित उदाहरण दिए गए हैं।)

भाषा कैसी हो?

सामान्यतः यह प्रश्न किया जाता है कि

“सहज-सरल भाषा प्रयोग किया जाए या स्तरीय-साहित्य भाषा का?”

मेरा जवाब होगा:

“सहज या स्तरीय भाषा का प्रयोग करने के बजाय आप अपनी भाषा का प्रयोग करें।”

दोस्तों! कौन-सी भाषा सहज है और कौन-सी स्तरीय? यह एक आत्मनिष्ठ (subjective) सवाल है। जो भाषा एक व्यक्ति के लिए सहज है, वहीं दूसरे व्यक्ति के लिए अति स्तरीय हो सकता है, और तीसरे के लिए यही भाषा सतही किस्म की हो सकती है। वस्तुतः सतही भाषा सहज भाषा, स्तरीय भाषा, जटिल भाषा आदि के निर्धारण के कोई वस्तुनिष्ठ पैमाने नहीं हो सकते। इसलिए इन सबके संबंध में अनावश्यक माथा-पच्ची के बजाय आप अपनी मौलिक भाषा का प्रयोग करें ताकि उसमें सहज प्रवाह आ सके और वह बोधगम्य हो। अनावश्यक रूप से तत्समपरक शब्दों के कृत्रिम प्रयोग से बचें। आपके वाक्य छोटे हों तो यह अच्छी बात है, मगर प्रवाहयुक्त लम्बा वाक्य हो तो भी चिंता की कोई बात नहीं। वह भी छोटे वाक्य की तरह ही प्रभावी माना जाएगा। वस्तुतः आपके वाक्य ऐसे होने चाहिए कि उस वाक्य में प्रयुक्त प्रत्येक शब्द आसानी से समझा जा सके मगर शब्दों के क्रम में प्रवाह से प्रभाव पैदा हो।

जैसे:- एक ही भाव को व्यक्त करने वाले दो वाक्य उन्हीं शब्दों के साथ दिए गए हैं:-

- (1) पगडंडियों पर चलने वालों के लिए कोई गर्दिश और बुलंदी नहीं होती।
- (2) पगडंडियों पर चलने वालों के लिए कैसी गर्दिश और कैसी बुलंदी?

केवल शब्दों के क्रम में परिवर्तन करके प्रभाव उत्पन्न किया गया है।

स्तरीयता की कोशिश में आप दो-चार पैराग्राफ तो रटी-रटाई चीजें लिख सकते हैं, मगर उसके बाद एकाएक अपनी औकात पर आ जायेंगे और इसका नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है।

हाँ! अपनी भाषा में सुधार का निरंतर प्रयास जारी रखना चाहिए लेकिन याद रखें भाषा में सुधार एक प्रक्रिया है, कोई घटना नहीं। अर्थात् अनवरत प्रयास से हमें भाषिक दृष्टि से सम्पन्न बना सकती है। इसलिए अच्छी अध्ययन सामग्रियों का लगातार अध्ययन करते रहें।

शब्द-सीमा क्या हो?

UPSC द्वारा निबंध हेतु कोई शब्द-सीमा नहीं दी गई है, अर्थात् हमें पूरी आजादी दी गई है। इसलिए निबंध की लम्बाई हम अपने हिसाब से रख सकते हैं।

विभिन्न लोगों से पूछताछ के क्रम में मैंने पाया कि लगभग 1500 शब्दों का निबंध लिखा जा सकता है।

मगर मेरी व्यक्तिगत मान्यता है कि अच्छी सामग्री जितना अधिक लिख सकें उतना ही अच्छा है। लेकिन केवल पेज भरने के लिए अनावश्यक विस्तार से बचें।

आप यह भी सुनते होंगे कि केवल 500 शब्दों का निबंध लिखा और उसे 150 अंक आए। दोस्तों! कुछ लोग कुछ विशेष विषयों में अति स्तरीय ज्ञान रखते हों और उन्हें कभी इस तरह का असाधारण अंक भी आया हो। मगर हम इसका सामान्यीकरण (generalization) नहीं कर सकते और केवल अति उत्साह में इस तरह का कोई दुस्साहसिक कदम नहीं उठा सकते।

अच्छी राइटिंग का महत्व

दोस्तों! सुंदरता दुनिया में किसे अच्छी नहीं लगती?

वस्तुतः पूरी मुख्य परीक्षा एक मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है। हम उत्तर-पुस्तिका में जो कुछ लिखते हैं वह एक क्रिया है। उसका परीक्षक के मनोमस्तिष्क में कुछ प्रभाव पड़ेगा और उसी की प्रतिक्रिया के रूप में हमें वह अंक प्रदान करेगा।

इसलिए हमें कोशिश यह करनी है कि परीक्षक को अधिकाधिक प्रभावित कर सकें। जाहिर है तभी वह हमें अच्छे अंक देगा।

चूँकि हमें इस प्रश्नपत्र में पूरी आजादी दी गई है। चूँकि हमारे पास पर्याप्त समय रहता है तब स्वाभाविक है कि सामान्यतः सभी लोग अच्छी राइटिंग में लिखेंगे और परीक्षक महोदय हमसे भी अच्छी राइटिंग की अपेक्षा करेंगे। 10 अच्छी राइटिंग वाली उत्तर पुस्तिकाओं के बाद यदि खराब राइटिंग वाली कोई उत्तर पुस्तिका आए तो स्वाभाविक रूप से उसे इसकी कीमत कुछ न कुछ तो चुकानी ही पड़ेगी।

कई लोग यह कहते हुए भी सुने जाते हैं कि खराब राइटिंग के बावजूद X के Y पेपर में Z अंक आए। माना खराब राइटिंग के बावजूद X के निबंध में 160 अंक आए। दोस्तों! हो सकता है कि X की अच्छी राइटिंग होती तो उसे 180 अंक मिले होते और आप इस परीक्षा में 1 अंक के साथ भी समझौता नहीं सकते। क्योंकि अंतिम चयन पद, कैडर सबमें 1-1 अंकों से ही अंतर पड़ता है और तब रोने का कोई औचित्य नहीं।

मेरी दृष्टि में अच्छी राइटिंग का सबसे बड़ा पैमाना उसकी पठनीयता है। साथ में वह देखने में भी सुंदर लगे तो और भी अच्छा है। आप महत्वपूर्ण वाक्यों के नीचे लाईन (underline) भी खींच सकते हैं।

हाँ दोस्तों! जिनकी hand writing खराब है, वे अधिक न घबराएं। व्यक्ति कभी पूर्ण नहीं हो सकता आप में यह अपूर्णता है, सामने वाले में कोई दूसरी अपूर्णता हो सकती है। साथ ही सिविल सेवा परीक्षा में इतना तो हरेक व्यक्ति मानता है कि प्रत्येक उत्तरपुस्तिका को न केवल पढ़ा जाता है, बल्कि कोशिश कर-करके पढ़ा जाता है और अंदर लिखी सामग्री राइटिंग से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है। हाँ! लेकिन कड़ी प्रतिष्पर्द्धा के नजरिए से मैंने इसकी महत्ता पर लम्बी-चौड़ी कवायद की है और मेरी सलाह है कि आप राइटिंग को परीक्षक के पढ़ने लायक जरूर बना लें और इसके बाद कोई चिंता करने की जरूरत भी नहीं।

विभिन्न रंगों का प्रयोग

अतिरिक्त प्रभाव डालने के लिए आप अलग-अलग रंगों का प्रयोग कर सकते हैं। मगर याद रखें कि आपकी उत्तरपुस्तिका कोई रंगोली नहीं। अर्थात् भड़कीले रंगों के अत्यधिक प्रयोग से बचें। सामान्यतः तीन रंगों का प्रयोग किया जा सकता है:-

- सामान्य लेखन हेतु नीली स्याही (Blue Ink) और Underline करने के लिए काली स्याही (Black Ink)
- और हेडिंग आदि देने के लिए कोई तीसरे रंग की स्याही।

उद्धरणों (Statements) एवं पद्यों का प्रयोग

मौलिकता और प्रवाह के साथ किया जाने वाले कोई भी लेखन जायज है और कोई भी कृत्रिम कोशिश नाजायज। अर्थात् किसी विचार के अभिव्यक्ति के क्रम में अगर कोई कथन स्वाभाविक रूप से आ रहा है तो वह आपके निंध का वजन (gravity) बढ़ायेगा। मगर यदि कोई कथन आप ऐसे ही याद करके चले गए हैं और अपने निबंध में उसे जबरन कहीं लिखने का प्रयास कर रहे हैं तो यह आपके निबंध पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकता है।

उद्धरणों, पद्य-पंक्तियों को विचार के प्रवाह में कैसे प्रयोग किया जाए। इसे उदाहरण द्वारा बेहतर तरीके से समझा जा सकता है। इसलिए उदाहरण आगे प्रस्तुत किए गए हैं।

उपसंहार कैसे लिखें?

उपसंहार आपके तरकश का आखिरी तीर है। इसलिए इसकी भी महत्ता निर्विवाद है। उपसंहार लिखते समय निम्न बातों का ध्यान रखें:-

- जिज्ञासा भूमिका का मूल बिन्दु है और इस जिज्ञासा का उपयुक्त समाधान उपसंहार के आते-आते हो जाना चाहिए।
- विषय विशेष में विभिन्न विचारों के निचोड़ को बहुत ही कम शब्दों में व्यक्त कर देना चाहिए।

- उपसंहार की दिशा भविष्योन्मुखी होनी चाहिए।
- उपसंहार आशा और सपनों की भाषा होनी चाहिए।
- उपसंहार निष्कर्ष देने की प्रक्रिया है इसलिए कोई नया मुद्दा उपसंहार में नहीं उठाना चाहिए।
(उपसंहार से संबंधित उदाहरण भी आगे दिए गए हैं)

35 सूत्र (सारांश)

- निबंध प्रश्नपत्र आपके अंतिम परिणाम में नाटकीय परिवर्तन ला सकता है।
- निबंध प्रश्नपत्र में हमें स्वयं को अभिव्यक्त करने की पूरी आजादी मिलती है फलतः परीक्षक की अपेक्षाएं भी अधिक होती हैं।
- निबंध मूलतः आपके व्यक्तित्व की परीक्षा है।
- स्वयं को एक जिम्मेदार प्रशासक समझकर निबंध लिखें।
- निबंध लिखते समय मौलिकता नवीनता और सकारात्मक सोच पर विशेष बल दें।
- सांकेतिक नोट्स बनाने की शैली निबंध प्रश्नपत्र के लिए भी काफी कारगर होती है।
- अपनी रुचि एवं पृष्ठभूमि के अनुरूप निबंध की तैयारी के लिए कुछ विशेष क्षेत्रों का चयन कर लें।
- परीक्षा-कक्ष में विषय का चयन सोच-समझकर करें।
- विशिष्ट विषयों में ही निबंध लिखने की अनावश्यक अंधभक्ति से बचें।
- सोचना फिर लिखना की रणनीति से बेहतर है “सोचना-लिखना सोचना-लिखना” की रणनीति।
- लेखन समग्रतावादी (holistic) हो।
- किसी विचारधार के प्रति अंधभक्ति से बचें। लेफ्ट-राइट (left-right) का चक्कर छोड़कर मानव-मूल्योन्मुख दृष्टि से लिखें।
- चिंतन युक्तिसंगत हो, अर्थात् हर विषय का तार्किक विश्लेषण करके उसके सकारात्मक एवं नकारात्मक पक्ष को सामने लाया जाए तथा एक संतुलित निष्कर्ष दिया जाए।
- जब किसी विषय के कुछ पहलुओं की तैयारी होती है तो परीक्षा में उस विषय का निबंध देखते ही हम उन पहलुओं को ही लिखना शुरू कर देते हैं, जबकि निबंध में कुछ अन्य पहलुओं के विश्लेषण की माँग होती है।
- अर्थात् पूछे गए निबंध का वास्तविक अर्थ एवं अपेक्षाएं पहले समझें।
- लेखन में क्रमबद्धता हो।
- बहुआयामी समाधान प्रस्तुत करें।
- भूमिका और उपसंहार को अंतिम रूप से उत्तरपुस्तिका में लिखने के पूर्व रफ में लगभग शब्दशः पहले लिख लें।
- सम्पूर्ण निबंध यथार्थ से आदर्श की यात्रा होनी चाहिए।
- इसी तरह निबंध समस्या से समाधान की भी यात्रा है।
- भूमिका का मूल बिन्दु जिज्ञासा है और आगे जिज्ञासाओं का समाधान होते जाना चाहिए।
- मौलिक भाषा का प्रयोग करें।
- ऐसी भाषा हो कि लगे कि आप परीक्षक से बात कर रहे हैं।
- मुहावरों एवं लोकोक्तियों का प्रयोग करें।
- विराम चिन्हों का यथोचित प्रयोग करें।
- लेखन संबंधी त्रुटियों से बचें।
- अच्छी हैंडराइटिंग (hand writing) महत्वपूर्ण है।
- पठनीयता अच्छी हैंडराइटिंग का पहला पैमाना है।
- 2-3 रंगों का प्रयोग कर सकते हैं।

- महत्वपूर्ण वाक्यों का अण्डरलाईन (underline) करें।
- मौलिकता एवं विचारों के प्रवाह के क्रम में उद्धरणों एवं पद्य-पंक्तियों का प्रयोग करें।
- उपसंहार में मुद्दों का निष्कर्ष होना चाहिए।
- उपसंहार में कोई नया मुद्दा न उठाएं।
- उपसंहार में सोच की दिखा भविष्योन्मुखी, स्वप्नशील एवं आशा से लबालब होनी चाहिए।

भूमिकाएँ

1. **पहली शैली:-** आगे जो कुछ कहा जाना है, उसका संकेत देते हुए भूमिका लिखना।

विषय : विज्ञान बनाम धर्म

भूमिका:- मानव और समाज के कल्याणार्थ धर्म और विज्ञान की भूमिका पूरकता एवं सहभागिता की है मगर मानव सभ्यता के इतिहास में कई बार धर्म और विज्ञान, दोनों की गलत व्याख्याएं होती रहीं। फलतः इससे अनेक बार सामाजिक निहितार्थों पर कुठारघात हुआ। इसलिए मानव सभ्यता के सम्मुख खड़े इन ज्वलंत प्रश्नों से हमें टकराना ही होगा कि-

आखिरी विज्ञान है क्या? लैबोरेटरी (Laboratory : प्रयोगशाला) से बाहर की दुनिया से उनका क्या संबंध है? इसी तरह धर्म क्या है? मानवीय दृष्टि से उसके सकारात्मक एवं नकारात्मक आयाम क्या है? इतिहास में अनेकों बार धर्म पर हमले क्यों हुए? और अंततः मानवता की कल्याण की दृष्टि से धर्म और विज्ञान के संबंध को कैसे देखा जाए? आदि-आदि।

2. **दूसरी शैली- नाटकीय शुरूआत**

राजनीति विज्ञान में से विज्ञान शब्द क्यों लगा है भला राजनीति और विज्ञान में भी कोई नाता हो सकता है?

हाँ! क्यों नहीं हो सकता।

नहीं! अगर ऐसा होने लगे तो कल साहित्य शब्द के साथ भी विज्ञान लगते देर न लगेगी।

यदि साहित्य में विज्ञान लग भी जाए तो आखिर दिक्कत क्या है? क्या कबीर एक वैज्ञानिक नहीं थे?

नहीं! वैज्ञानिक बनने के लिए फिजिक्स, केमेस्ट्री पढ़ना पड़ता है। लैबोरेटरी जाना पड़ता है। जबकि कबीर तो अनपढ़ थे। लैबोरेटरी की बात तो बड़ी दूर है, स्लेट और खड़िया भी नहीं छूए थे। तो वे वैज्ञानिक कैसे हो सकते हैं।

उद्धरणों एवं पद्य-पंक्तियों के प्रयोग का उदाहरण

- (1) पिछली सदी के महान वैज्ञानिक अल्बर्ट आइन्स्टाइन ने कहा था कि धर्म के बिना विज्ञान अधूरा है और विज्ञान के बिना धर्म। वस्तुतः धर्म और विज्ञान में आपसी सहभागिता भी है और पूरकता भी। इन्हें अलग करने या विरोधी बनाने की कोई भी कोशिश मानवीय हितों के विरोध में होगी।
- (2) वस्तुतः हमारी शिक्षा पद्धति ऐसी है जहां हम विज्ञान तो पढ़ा लेते हैं, मगर वैज्ञानिक मानसिकता पैदा नहीं कर पाते। इसलिए अनेक बार बड़े-बड़े सॉफ्टवेयर स्पेशलिस्ट काम्पलेक्स प्रोग्रामिंग तो कर लेते हैं मगर बिल्ली के रास्ता काटते ही सारे दिन घर में बैठे रहते हैं। इसी तरह, बड़े-बड़े कार्डियोलॉजिस्ट दिल का परफेक्ट पड़ताल कर पाते हैं मगर दहेज माँगने से नहीं चुकते अपनी धर्मपत्नी को मारने-पीटने भी लग जाते हैं। कहा जाता है पढ़ने के साथ-साथ कढ़ना भी जरूरी है। सैकड़ों वर्ष पहले ही कबीर ने लिखा था:

पोथी पढ़ि-पढ़ि जग मुआ, पण्डित भया न कोया।

ढाई आखर प्रेम का, पढ़ै सो पण्डित होया॥

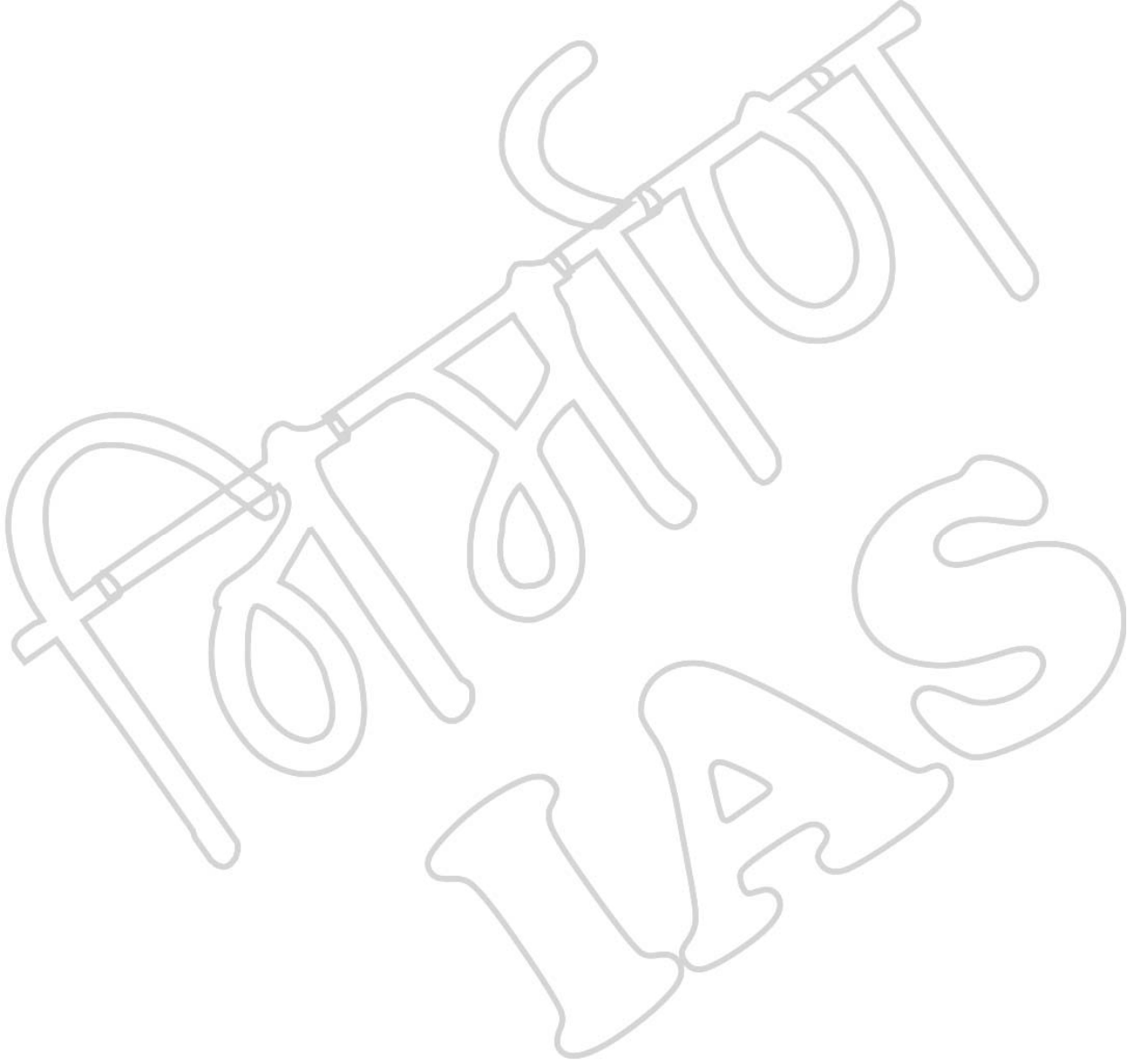
उपसंहार का उदाहरण

निबंध : वैश्वीकरण एवं भारतीय संस्कृति पर उसका प्रभाव

इकबाल ने लिखा है:-

*यूनान, मिश्र, रोमां, सब मिट गए जहाँ से;
कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी।*

वस्तुतः भारतीय संस्कृति एक सामासिक संस्कृति है अर्थात् तमाम तरह के विरोधाभासों को लेकर चलने की क्षमता से युक्त है। इतिहास के झरोखे में झांक कर देखें तो शक आए, हुण आए कुषाण आए, ईस्लाम आया मगर इनके आगमन से भारत की मौलिक संस्कृति क्षत-विक्षत नहीं हो गई, बल्कि दीर्घकालिक रूप से और भी समृद्धि और पुष्ट होती चली गई इतिहास के इस अनुभव के आधार पर हम कह सकते हैं कि भारतीय संस्कृति वैश्वीकरण की इस प्रक्रिया से भी अंततः समृद्ध और समुन्नत होगी। हालांकि इन वाक्यों में आशा का स्वर ही झलकता है, मगर हमें यह भी याद रखना चाहिए कि आशा पर ही आकाश टिका है।



1993 से 2017 तक के निबंध के प्रश्नों का एक संकलन

2017

1. भारत में अधिकतर कृषकों के लिए कृषि जीवन-निर्वाह का एक सक्षम स्रोत नहीं रही है।
Farming has lost the ability to be a source of subsistence for majority of farmers in India.
2. भारत में संघ और राज्यों के बीच राजकोषीय संबंधों पर नए आर्थिक उपायों का प्रभाव।
Impact of the new economic measures on fiscal ties between the union and states in India.
3. राष्ट्र के भाग्य का स्वरूप-निर्माण उसकी कक्षाओं में होता है।
Destiny of a nation is shaped in its classrooms.
4. क्या गुटनिरपेक्ष आंदोलन (नाम) एक बहुध्रुवी विश्व में अपनी प्रासंगिकता को खो बैठा है?
Has the Non- Alignment Movement (NAM) lost its relevance in a multipolar world?

SECTION-B

1. हर्ष कृतज्ञता का सरलतम रूप है।
Joy is the simplest form of gratitude.
2. भारत में 'नए युग की नारी' की परिपूर्णता एक मिथक है।
Fulfilment of 'new woman' in India is a myth.
3. हम मानवीय नियमों का तो साहसपूर्वक सामना कर सकते हैं, परंतु प्राकृतिक नियमों का प्रतिरोध नहीं कर सकते।
We may brave human laws but cannot resist natural laws.
4. 'सोशल मीडिया' अंतर्निहित रूप से एक स्वार्थपरायण माध्यम है।
'Social media' is inherently a selfish medium.

2016

1. स्त्री-पुरुष के समान सरोकारों को शामिल किये बिना विकास संकटग्रस्त है।
"If development is not engendered, it is endangered."
2. आवश्यकता लोभ की जननी है, तथा लोभ का आधिक्य नस्लें बर्बाद करता है।
Need brings greed, if greed increase it Spoils breed.
3. संघीय भारत में राज्यों के बीच जल-विवाद।
Water disputes between states in federal India.
4. नवप्रवर्तन आर्थिक संवृद्धि और सामाजिक कल्याण का अपरिहार्य निर्धारक है।
Innovation is the key determinant of economic growth and social welfare.

SECTION-B

1. सहकारी संघवाद : मिथक अथवा यथार्थ।
Cooperative federalism : Myth or reality.
2. साइबरस्पेस और इंटरनेट : दीर्घअवधि में मानव सभ्यता के लिए वरदान अथवा अभिशाप।
Cyberspace and Internet: Blessing or curse to the human civilization in the long run?
3. भारत में लगभग रोजगारविहीन संवृद्धि: आर्थिक सुधार की विसंगति या परिणाम।
Near Jobless growth in India : an anomaly or an outcome of economic reforms.
4. डिजिटल अर्थव्यवस्था: एक समताकारी या आर्थिक असमता का स्रोत।
Digital Economy : A Leveller or a Source of economic inequality.

2015

1. किसी को अनुदान देने से, उसके काम में हाथ बटौना बेहतर है।
2. फुर्तीला किन्तु संतुलित व्यक्ति ही दौड़ में विजयी होता है।
3. किसी संस्था का चरित्र-चित्रण उसके नेतृत्व में प्रतिबिम्बित होता है।
4. मूल्यांकों से वंचित शिक्षा, जैसी अभी उपयोगी है व्यक्ति को अधिक चतुर शैतान बनाने जैसी लगती है।

SECTION-B

1. प्रौद्योगिकी मानवशक्ति को विस्थापित नहीं कर सकती।
2. भारत के सम्मुख संकट-नैतिक या आर्थिक
3. वे सपने जो भारत को सोने न दें।
4. क्या पूँजीवाद द्वारा समावेशित विकास हो पाना संभव है?

2014

1. अधिकार (सत्ता) बढ़ने के साथ उत्तरदायित्व भी बढ़ जाता है।
2. क्या प्रतिस्पर्धा का बढ़ता स्तर युवाओं के हित में है?
3. क्या मानकीकृत परीक्षण शैक्षणिक योग्यता या प्रगति का बढ़िया माप है?
4. शब्द दो धारी तलवार से अधिक तीक्ष्ण होते हैं।

SECTION-B

1. क्या यह नीति गतिहीनता थी या क्रियान्वयन गतिहीनता जिसने हमारे देश की संवृद्धि को मंथर बना दिया था?
2. क्या स्टिंग ऑपरेशन निजता पर एक प्रहार है?
3. ओलम्पिक में पचास स्वर्ण: क्या भारत के लिए वास्तविकता हो सकती है।
4. पर्यटन: क्या भारत के लिए यह अगला बड़ा प्रेरक हो सकता है।

2013

1. जो बदलाव आप दूसरों में देखना चाहते हैं: पहले स्वयं में लाइए-गाँधी जी
2. क्या औपनिवेशिक मानसिकता भारत की सफलता में बाधक हो रही है?
3. सकल घरेलू उत्पाद (GDP) के साथ-साथ सकल घरेलू खुशहाली (GDH) देश की सम्पन्नता के मूल्यांकन के सही सूचक होंगे।
4. राष्ट्र के विकास व सुरक्षा के लिए विज्ञान व प्रौद्योगिकी (Technology) सर्वोपचार है।

2012

1. कामकाज और घर की संभाल - क्या भारतीय कामकाजी महिला एक न्यायोचित बरताव प्राप्त कर रही है?
2. विज्ञान और रहस्यवाद: क्या वे संगत हैं?
3. विषय पर गांधी जी के विचारों के संदर्भ में 'स्वाधीनता', 'स्वराज्य' और 'धर्मराज्य', शब्दों का क्रमविकासात्मक पैमाने पर अन्वेषण कीजिए। भारतीय लोकतंत्र पर उनकी समकालीन प्रासंगिकता पर समालोचनात्मक टिप्पणी कीजिए।
4. क्या आलोचना की विकास के लिए लोक-निजी-साझेदारी (PPP)का मॉडल भारत के संदर्भ में वरदान से अधिक शाप है, औचित्यपूर्ण है?

2011

1. लघुतर राज्यों का सृजन और परिणामी प्रशासनिक, आर्थिक एवं विकासी निहितार्थ।
2. क्या भारतीय सिनेमा हमारी लोक संस्कृति को रूप प्रदान करता है या कि केवल उसको प्रतिबिम्बित करता है?
3. ऋण आधारित उच्च शिक्षण प्रणाली- स्थिति, अवसर एवं चुनौतियाँ।
4. भारत के संदर्भ में आतंकवाद का मुकाबला करने में मानवीय असूचना एवं तकनीकी असूचना दोनों ही निर्णायक हैं।

2010

1. भूगोल यथावत बना रह सकता है; इतिहास के लिए यह आवश्यक नहीं है।
2. क्या देश के जनजातीय क्षेत्रों में सभी नूतन खननों पर अधिस्थगन लागू किया जाना चाहिए?
3. भारत की वैश्विक नेतृत्व भूमिका के लिए हमारे समाज की तैयारी।
4. पारम्परिक भारतीय परोपकारिता से गेटस-बफेट मॉडल तक-एक सहज प्रगमन या कि एक रूपावली अंतरण?

2009

1. क्या हमारे परम्परागत हस्तशिल्पों की नियति में मंथन मृत्यु लिखी है?
2. क्या हम एक 'मृदु' राज्य हैं?
3. "स्वास्थ्य देखभाल का फोकस हमारे समाज के स्मृद्धों के पक्ष की ओर अधिकाधिक विषम बनता जा रहा है"
4. "बढ़िया बाड़े बढ़िया पड़ोसी बनाती हैं।
5. वैश्वीकरण बना राष्ट्रवाद

2008

1. सुशासन में मीडिया की भूमिका
2. राष्ट्रीय पहचान और देशभक्ति
3. विशेष आर्थिक क्षेत्र: वरदान या अभिशाप
4. अनुशासन का अर्थ सफलता, अराजकता का अर्थ विनाश होता है।
5. नगरीकरण और उसके खतरे।
6. क्या सर्वसाधारण के शिक्षण के द्वारा समतावादी समाज सम्भव है?

2007

1. स्वतंत्र विचरण को बचपन से ही प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए।
2. निर्धनता उन्मूलन से लेकर जनसशक्तिकरण की दृष्टि से भारत में पचायाती राज प्रणाली का मूल्यांकन।
3. अभिवृत्ति आदत बनाती है, आदत चरित्र को बनाता है और चरित्र आदमी को बनाता है।
4. भारत में B.P.O तेजी।
5. क्या स्वायतता विघटन से लड़ाई का सर्वोत्तम उत्तम है?
6. उपग्रही टेलीविजन ने भारतीय मानस में किस प्रकार सांस्कृतिक परिवर्तन पैदा कर दिया है?

2006

1. धारणीय आर्थिक विकास के लिए परिस्थितिकी एवं पर्यावरण का परिरक्षण आवश्यक है।
2. भारत- U.S.A नाभिकीय करार का महत्व।
3. भारत में सभी के लिए शिक्षा अभियान: मिथक या वास्तविकता
4. वैश्वीकरण भारत में लघु उद्योगों को समाप्त कर देगा।
5. बढ़ता हुआ कम्प्यूटरीकरण अपमानवीकृत समाज के निर्माण तक पहुँचा देगा।

2005

1. न्याय को गरीब तक पहुँचना ही चाहिए।
2. शिशु को खिलाने वाला हाथ
3. यदि महिलाएँ संसार पर शासन करती
4. वास्तविक शिक्षा क्या है
5. आतंकवाद और विश्व शांति
6. धारणीय राष्ट्रीय विकास के लिए खाद्य सुरक्षा

2004

1. आसियान सहयोग को बढ़ावा देने में भारत की भूमिका
2. न्यायिक सक्रियता और भारत का लोकतंत्र
3. महिला मुक्ति किस ओर?
4. वैश्वीकरण और भारतीय संस्कृति पर उसका प्रभाव
5. अंतरिक्ष का तीव्र आकर्षण
6. जल संसाधन केन्द्रीय सरकार के नियंत्रण में होने चाहिए?

2003

1. नव साम्राज्यवाद के मुखौटे।
2. भारत का प्रजातंत्र किस हद तक अपना उद्देश्य पूरा कर पाया है?
3. लोक सेवकों को किस प्रकार का आचरण करना चाहिए?
4. सभ्यता की प्रगति से संस्कृति का ह्रास होता है।
5. आध्यात्मिकता और वैज्ञानिक प्रवृत्ति
6. अच्छा बुरा स्वयं में कुछ नहीं है केवल विचार ही अच्छा बुरा बनाते हैं।

2002

1. आधुनिक प्रौद्योगिकी शिक्षा और मानवीय मूल्य
2. सत्य की खोज केवल एक आध्यात्मिक समस्या हो सकती है।
3. यदि यौवन जानता, यदि बुढ़ापा सक्षम होता
4. महिमा की राहें मृत्यु तक जाती हैं।
5. लोकतंत्र में मीडिया का दायित्व
6. भारत में उच्च शिक्षा का निजीकरण।

2001

1. हमने लोकतांत्रिक व्यवस्था से क्या सीखा?
2. एक आदर्श विश्वव्यवस्था की मेरी कल्पना।
3. विज्ञान की प्रगति और मानवीय मूल्यों का ह्रास
4. कक्षा की अप्रसंगिकता
5. विशिष्टता की खोज
6. केवल शक्ति और अधिकार ही औरतों की मदद नहीं कर सकते।

2000

1. हमें भारतीय होने पर गर्व क्यों करना चाहिए?
2. साइबर विश्व: इसके आकर्षण एवं चुनौतियाँ
3. देश को एक बेहतर आपदा प्रबंधन व्यवस्था की आवश्यकता?
4. आज की भारतीय संस्कृति: मिथक अथवा वास्तविकता
5. भारत के लिए भूमंडलीय के निहितार्थ?
6. आधुनिक और हमारे पारम्परिक सामाजिक और नैतिक मूल्य?

1999

1. महिला शक्ति सम्पन्नीकरण: चुनौतियाँ एवं सम्भावनाएँ
2. आज की युवा जीवनशैली
3. जन माध्यम और सांस्कृतिक आक्रमण
4. संसाधन प्रबंधन भारत के संदर्भ में
5. मूल्यधारिता विज्ञान एवं शिक्षा
6. आरक्षण, राजनीतिक और शक्ति सम्पन्नकरण

1998

1. भारत की समेकित संस्कृति
2. नारी ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ कृति है।
3. भारत में स्वतंत्रता की गलत व्याख्या एवं दुरुपयोग
4. वैज्ञानिक ज्ञान भंडार में भारत का योगदान
5. भारत में भाषा की समस्या: उसका भूत, वर्तमान एवं संभावनाएँ
6. 21वीं सदी की दुनिया।

1997

1. स्वतंत्रता के 50 वर्षों में हमने जो नहीं सिखा
2. न्यायिक सक्रियतावाद
3. केवल अकिधतर राजनीतिक अधिकार महिलाओं की स्थिति में सुधार नहीं ला सकता।
4. सच्चे धर्म का दुरुपयोग नहीं किया जा सकता।
5. आधुनिक डॉक्टर और उसके रोगी।
6. नगरीकरण एक प्रच्छन्न वरदान है।

1996

1. साक्षरता में अत्यंत तीव्र गति से वृद्धि हो रही है किन्तु उसके अनुरूप शिक्षा का विकास नहीं हो रहा है।
2. वर्तमान की वास्तविकताओं को परिप्रेक्ष्य में सयुक्त राष्ट्र संघ की पुनः संरचना
3. नए मत तथा इश-पारम्परिक धर्मों के लिए खतरा
4. विशिष्ट व्यक्ति केन्द्रित रूढ़ि भारतीय प्रजातंत्र के लिए अभिशाप है।
5. लोक प्रशासन में पारदर्शिता की आवश्यकता।
6. सत्य जिया जाता है, सिखाया नहीं जाता।

1995

1. नैतिकता विहीन राजनीति अनर्थकारी होती है
2. उभरती हुई नारी शक्ति: सही वस्तुस्थिति
3. जब अर्थ बोलता है तब सत्य मौन हो जाता है
4. भारतीय लोकतंत्र कहाँ जा रहा है
5. भारत में शिक्षा प्रणाली की पुनः संरचना
6. जितना ही हम अपने कर्मों को निर्धारित करते हैं, उतना ही हमारे कर्म हमें निर्धारित करते हैं।
7. निष्काम बौद्धिक जिज्ञासा यथार्थ सभ्यता का जीवन रस है।

1994

1. बचपन भूल है, यौवन संघर्ष है तो बुढ़ापा पश्चाताप
2. भारतीय समाज असमंजस में
3. सिविल कर्मचारियों के सम्मुख आज चुनौतियाँ
4. आधुनिकीकरण एवं पाश्चात्यीकरण एक नहीं है
5. निरर्थक जीवन तो अकाल मृत्यु है।
6. राजनीति, व्यवसाय और अधिकारीतंत्र- एक घातक त्रिभुज
7. बहुराष्ट्रीय निगम- रक्षक या अन्तध्वंसक।

1993

1. जन 2001 के भारत की कल्पना
2. उभरती हुई राजनीतिक व आर्थिक विश्व व्यवस्था
3. 'आत्मानुशासन करने वाला तथा भावावेग, इच्छा व भय को वश में रखने वाला व्यक्ति राजा से भी बड़ा होता है'
4. सम्पूर्ण नैतिकता का आधार है-करुणा।
5. पुरुष तो असफल हो गये- अब महिलाएँ ही बागडोर थामे।
6. वितरण न्याय के बिना आर्थिक प्रगति अवश्य ही हिंसा को जन्म देती है
7. पारिस्थितिक विचार विकास में बाधक हों, यह आवश्यक नहीं।
8. कम्प्यूटर: एक मौन क्रांति का अग्रदूत

वैश्वीकरण का भारतीय संस्कृति पर प्रभाव (IMPACT OF GLOBALISATION ON INDIAN CULTURE)

– ओम प्रकाश चौधरी (आईएस)

आखिर सब कुछ तो बदला-बदला सा लगता है। चारों ओर भागम-भाग भरी जिंदगी है। देश में कहीं भी चले जाइए; कोल्ड-ड्रिंक्स, मटर-पनीर, पीजा-बर्गर तो मिल ही जाते हैं। छोटे-छोटे शहरों में भी ब्यूटी पार्लर और जिम सेंटर खुलने लगे हैं। हाय-हेलो, गुड-मॉर्निंग, गुड-नाइट जैसे नए-नए सम्बोधन प्रयुक्त होने लगे हैं। वेलेनटाईन डे, फ्रेंडशिप डे, रोज डे जैसे नये-नये पर्व-त्यौहार मनाए जा रहे हैं। युवा-युवतियों की वेशभूषा भी तो काफी बदले-बदले से लगती है: जीन्स, टॉप, न जाने क्या-क्या?

आखिर यह सब क्या है?

शायद वैश्वीकरण का प्रभाव ही तो है।

वैश्वीकरण मूलतः एक आर्थिक अवधारणा है। बन्द अर्थव्यवस्था एवं खुली अर्थव्यवस्था-दो चरम आदर्शात्मक स्थितियाँ हैं। नियमों-विनियमों में लचीलापन लाकर बन्द अर्थव्यवस्था को खुली अर्थव्यवस्था में परिवर्तित करने की प्रक्रिया को उदारीकरण कहा जाता है। और जब उदारीकरण की इस प्रक्रिया को वैश्विक स्तर पर लगभग सभी राष्ट्र एक साथ एक व्यवस्था के तहत अपनाते हैं तो इसी प्रक्रिया को वैश्वीकरण कह दिया जाता है। एक दृष्टि से वैश्वीकरण, उदारीकरण का चरम आदर्श भी है क्योंकि वैश्वीकरण की अवस्था में किन्हीं भी दो राष्ट्रों के बीच की राजनीतिक सीमा आर्थिक क्रियाकलापों में किसी भी तरह का कोई अवरोध आरोपित नहीं करती है।

वैश्वीकरण अन्तर्राष्ट्रवाद की अवधारणा से भी भिन्न है क्योंकि अन्तर्राष्ट्रवाद विभिन्न राष्ट्रों के प्रति समर्पण भाव को द्योतित करने वाली मूलतः एक राजनीतिक अवधारणा है जो विश्व-बन्धुत्व का दार्शनिक-मूल्यात्मक पुट भी धारण किए हुए है। जबकि वैश्वीकरण मूलतः एक आर्थिक विचार है, जैसा कि पहले ही स्पष्ट किया गया है।

हालांकि वैश्वीकरण की प्रक्रिया मूलतः 1980 और 1990 के दशक में अपनायी गयी। फिर भी इसके जड़ों की तलाश 1960 के आसपास के उत्तर-औद्योगिक समाज में हम कर सकते हैं। वैश्विक इतिहास का यह वह दौर था जब-

- साम्राज्यवाद समाप्त हो चुका था, फलतः बाजार का क्षेत्रीय विस्तार अवरुद्ध हो गया था।
- वैश्विक जनसंख्या वृद्धि दर में कभी आने लगी थी।
- तकनीकी उन्नयन अपने चरम पर था।

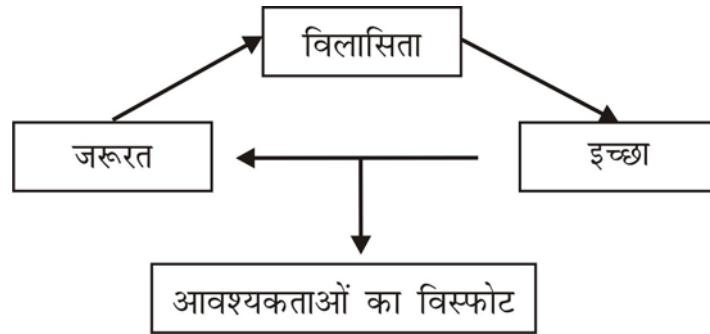
इनमें से प्रथम दो कारक बाजार माँग में की लाए, वहीं तीसरे कारक ने उत्पादन में वृद्धि कर दी। फलतः बाजार की मूल समस्या उत्पादन बढ़ाने की न रहकर उत्पादित माल को खपाने की रह गई। अर्थात् स्थिति औद्योगिक क्रांति के ठीक विपरीत थी।

इस विशिष्ट स्थिति में बाजार ने वैश्वीकरण की रणनीति का प्रयोग किया, ताकि बाजार का विस्तार किया जा सके। वैश्वीकरण का सांस्कृतिक मंत्र है: उपभोक्तावाद। उपभोक्तावाद ऊपरी तौर पर तो उपभोक्ता को केन्द्रीयता प्रदान करता है मगर वास्तविक अर्थों में वह उपभोक्ता को विज्ञापन के इन्द्रजाल में फंसाता है। यह व्यक्ति की जरूरतों के विस्तार में विश्वास करने वाला विचार है। यह लिखो और फेंको के दर्शन पर आधारित है। इन्सान को जरूरतों के तिलचट्टे में तब्दील कर देने में ही इसकी सफलता आधारित है।

शास्त्रीय अर्थव्यवस्था (Classical Economy) जहाँ व्यक्ति की तीन तरह की आवश्यकताओं की बात करता है:-

- जरूरत (Need)
- इच्छा (Desire)
- विलासिता (Luxury)

लेकिन उपभोक्तावाद विलासिता को इच्छा के रूप में और इच्छा को जरूरत के रूप में परिभाषित करता है:



इन तीनों के भेद को मिटा देना उपभोक्ता रणनीति का अहम् हिस्सा है। माना इन तीनों के बीच की विभाजक रेखा अत्यन्त सूक्ष्म है; फिर भी इतना तो कहा ही जा सकता है कि सुबह की हवाखोरी कोई विलासिता नहीं, लेकिन ए.सी. (Air Condition) के नीचे सोना तो विलासिता है। वैश्वीकरण की प्रक्रिया से राष्ट्रों के बीच की सीमा कमजोर पड़ी है इसे सूचना-प्रौद्योगिकी ने और भी प्रोत्साहित किया है। फलतः राष्ट्रों के बीच की दूरियाँ घटी हैं, सम्पूर्ण विश्व सिमटा है, विश्व-ग्राम (Global Village) की अवधारणा का जन्म हुआ है, सम्प्रभुता पुनःपरिभाषित हो रही है। इतनी नजदीकियों के दौर में यह स्वाभाविक ही है कि जीवन के सभी क्षेत्र अन्य राष्ट्रों से प्रभावित हों, फलतः संस्कृति भी इनसे पृथक् नहीं रह सकती।

तब स्वाभाविक रूप से यह विचारणीय हो जाता है कि आखिर वैश्वीकरण ने भारतीय संस्कृति को कैसे प्रभावित किया है।

दिनकर ने कहा है- “जीवन के विटप (वृक्ष= tree) का पुष्प ही संस्कृति है।”

अर्थात् जीवन का सबसे सुंदर एवं सार तत्व ही संस्कृति है। संस्कृति प्रकृति के संशोधन की चेतना का नाम है। संस्कृति स्मृति की नदी होती है। मानव और समाज ने अपनी विकास परम्परा के दौरान जो उदात्त मूल्य ग्रहण किए हैं, उन समस्त मूल्यों का समुच्चय ही संस्कृति है। इसीलिए भारतीय संस्कृति अतीत की स्मृति पर अत्यधिक बल देने वाली संस्कृति रही है। हम देखते हैं कि भारतीय नवजागरण के पुरोधा इतिहास की पुनर्व्याख्या कर रहे थे और इतिहास को ऊर्जा के मनोवैज्ञानिक स्रोत के रूप में प्रयुक्त कर रहे थे। अतीत की स्मृति के साथ-साथ भविष्य के प्रति सपने देखने में भी भारतीय संस्कृति आस्था रखती है। भारतीय परम्परा की अनमोल धरोहर है: रामचरितमानस। इसमें अपने वर्तमान के अंधेरे को उल्लेखित करने के लिए गोस्वामी ने जहाँ कलियुग वर्णन किया, वहीं भविष्य के प्रति सपना देखते हुए रामराज्य की भी बात कही। इसी दर्शन का प्रतिफलन हम आधुनिक विचारक लेनिन के चिंतन में भी पाते हैं। जब वे अपनी कृति 'What should we do' की पहली लाइन लिखते हैं:-

“WE SHOULD DREAM”

कहने का तात्पर्य सिर्फ यही है कि भारतीय संस्कृति वर्तमान के साथ-साथ अतीत और भविष्य को भी साथ लेकर चलने वाली संस्कृति रही है। मगर आज वैश्वीकरण ने केवल और केवल तात्कालिकता को ही पोषित किया है आज का मानव सिर्फ और सिर्फ आज के लिए ही जीना चाहता है। उसे न ही बीते हुए कल से कोई प्रयोजन है और न ही आने वाले कल से। अतीत की समस्त स्मृतियों से शून्य, भविष्य के सारे सपनों से रहित आज का मानव क्या अत्याधुनिक आदिमानव नहीं होता जा रहा है?

भारतीय संस्कृति संबंध-बोध की संस्कृति रही है। यहाँ माँ और बेटे के बीच वात्सल्य से ओत-प्रोत लोरी और थपकन की प्रथा रही है। परन्तु आज वैश्वीकरण के बाद यांत्रिकता में अभिवृद्धि हुई है और यांत्रिकता ने संबंध-बोध को क्षति पहुँचाई है। किसी ने लिखा भी है कि

मशीन की खटर पटर से,
जाग गया मेरा मुन्ना,
और रात भर नहीं सोया
क्योंकि उसने माँ की लोरियाँ नहीं सुनी थी।

लेकिन आज वैश्वीकरण के परिणामस्वरूप जो उपभोक्तावादी आँधी चली है, उसके प्रभाव में माँ अपने बच्चे से यह कहती हुई सुनी जा सकती है-

“बेटे! रात में मैं और तुम्हारे पापा क्लब से लौटने में लेट हो जाएंगे। इसलिए मोहन से खाना बनवा लेना और खाना खाकर सो जाना।”

क्या उस बच्चे के बचपन को हम मौत के घाट नहीं उतार देते?

भारतीय संस्कृति प्रकृति के सान्निध्य की संस्कृति रही है। यहाँ सिन्धु घाटी सभ्यता के दौर से ही वृक्ष-पूजन, नदी-पूजन, पर्वत-पूजन की सुदीर्घ परम्परा रही है। यहाँ देवी-देवताओं के वाहन के रूप में पशु-पक्षियों की प्रतिष्ठा की गई है लेकिन आज ‘प्रकृति-सहयोग के स्थान पर ‘प्रकृति-विजय’ की अवधारणा प्रबल हुई है और प्रकृति का अंधाधुंध शोषण हो रहा है। इन सबका दुष्परिणाम भीषण परिस्थितिकीय-असंतुलन के रूप में सामने आया है तथा आज पुनः ‘सतत-विकास’ (Sustainable-Development) की आवश्यकता महसूस की जाने लगी है।

अभी कल 15 अक्टूबर 2004 को कलाम साहब के जन्म दिवस के अवसर पर एक छोटी-सी बच्ची ने उन्हें पूछा कि-

“मैं गरीब क्यों हूँ?”

एक व्यक्ति बिल गेट्स के घर में पैदा होता है, दूसरा व्यक्ति रेल पटरी के बलग की झोपड़पट्टी में- इन दो स्थितियों की व्याख्या केवल तर्क के आधार पर नहीं की जा सकती। कलाम साहब को पूछे गए प्रश्न के उत्तर में कहीं न कहीं आस्था का पुट होगा ही। इसलिए भारतीय संस्कृति तर्क और आस्था के समंजन पर विश्वास करती है। आध्यात्मिकता एवं भौतिकता का सम्मिलित स्वर ही भारतीय संस्कृति में दिखाई देता है। स्वामी विवेकानंद भारतीय संस्कृति के इसी बिन्दु के प्रवक्ता पात्र थे।

मगर आज वैश्वीकरण के परिणामस्वरूप सिर्फ और सिर्फ भौतिकता को ही प्रश्रय दिया जा रहा है जो निश्चित रूप से एक असंतुलन की ओर ही ले जाएगा।

वैश्वीकरण से भौतिक प्रगति को बढ़ावा मिला है, स्वास्थ्य सुविधाओं का विस्तार है, इससे जीवन-प्रत्याशा (life-expectancy) भी बढ़ी, फलतः वृद्धों की संख्या भी! परन्तु दूसरी ओर इसी वैश्वीकरण के परिणामस्वरूप मूल्यात्मक द्वास भी हुआ है। फलतः संयुक्त परिवार व्यवस्था टूटी है और हमारे सम्मानीय वृद्ध आज अकेलेपन के दंश को झेलने के लिए अभिशप्त हैं। यही होता है जब-जब मूल्य विहीन भौतिक प्रगति होती है।

भारतीय संस्कृति परोपकार की भावना से ओत-प्रोत संस्कृति रही है। ‘सर्वे भवन्तु सुखिनः’ का भाव इस संस्कृति की धड़कनों में मौजूद रहा है। परन्तु आज व्यक्ति का सरोकार सिर्फ ‘स्व’ या ‘अहम्’ तक ही रह गया है। आत्मकेन्द्रिकता के कीड़े के रूप में आज के इंसान को परिभाषित किया जा सकता है। सर्वार्थ के गीतों की परम्परा में जब स्वार्थ का कोलाहल सुनाई पड़े तो इसे सांस्कृतिक दृष्टि से कदापि जायज नहीं ठहराया जा सकता।

भारतीय संस्कृति में चार पुरुषार्थों की बात कहीं गई है: धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। भारतीय परम्परा अर्थ और काम को स्थान तो देती है, मगर इन्हें मर्यादित करने के लिए इनके दो किनारों पर धर्म और मोक्ष को खड़ा भी कर देती है। अर्थात् इस परम्परा में अर्थ और काम सीमाओं से मुक्त नहीं, युक्त हैं।

मगर आज का मानव काम को परम पुरुषार्थ के रूप में परिभाषित करता है तथा इसकी पूर्ति के लिए अर्थ को साधन के रूप में स्वीकार करता है। यही कारण है कि आज प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया नग्न और अर्द्धनग्न तस्वीरों से भरे रहते हैं। माना संतति के रूप में मानव जाति की अमरता के लिए सेक्स जीवन का अहम् हिस्सा है। मगर इंसान और जानवर में कुछ भेद भी होता है।

भारतीय संस्कृति उद्देश्य के साथ-साथ उद्देश्य पूर्ति के साधनों को भी बराबर महत्व देती है। मगर आज प्रतिस्पर्द्धा की आँधी दौड़ शुरू हो गयी है। गला काट प्रतियोगिता के इस दौर में साम, दाम, दण्ड, भेद-सभी तत्वों के प्रयोग को जायज ठहराया जा रहा है। इसी का प्रभाव हम देखते हैं कि आज किसी भ्रष्टाचारी का सामाजिक बहिष्कार नहीं होता बल्कि शादी-विवाह में ऊपरी कमाई वाले को उल्टी प्राथमिकता दी जाती है।

आज हममें संवेदनशीलता का भी निरंतर हास हो रहा है। हमारे लिए हत्या, हिंसा, बलात्कार जैसी घटनाएं आम होती जा रही हैं। भयावह के स्थान पर इन्हें हम सामान्य के रूप में स्वीकार करने लगे हैं। आज हमारे सामने टेलीविजन में हजारों मौत की खबर निकल जाती है, मगर हम चंद मिनटों के लिए भी नहीं सोचते। किसी ने लिखा भी है-

किसी में दया नहीं,
किसी में हया नहीं,
कोई नहीं सोचता;
जो सोचता है,
दुबारा नहीं सोचता।

इस तरह बाजार आधारित इस वैश्वीकरण ने भारतीय संस्कृति को अनेक तरह से आहत किया है। मगर सब कुछ अंधेरा नहीं है। सिक्के का केवल एक पहलू नहीं है। अर्थात् वैश्वीकरण ने भारतीय संस्कृति पर अनेक सकारात्मक प्रभाव भी डाले हैं।

वैश्वीकरण ने पूरी दुनिया को एक वैश्विक गाँव (global village) में तब्दील कर दिया है। पूरे विश्व में गतिशीलता (dynamicity) को भी इसने प्रोत्साहित किया है। लोगों की आवाजाही भी अत्यधिक बढ़ गई है। भारतीय संस्कृति में अनेक ऐसे कारक मौजूद रहे हैं, जो भारत को जगद्गुरु का दर्जा दिलाते हैं। इन कारकों के प्रसार से भारत की वैश्विक सांस्कृतिक छवि को निश्चित रूप से लाभ होगा। अर्थात् वैश्वीकरण की प्रक्रिया ने भारतीय संस्कृति को वैश्विक प्रसार का सुनहरा अवसर प्रदान किया है।

जाति-प्रथा भारतीय संस्कृति की दुखती रग है। अपने शुरुआत के बिन्दु पर यह सामान्य श्रम विभाजन था अर्थात् व्यक्ति की प्रतिभा एवं कौशल के आधार पर वह अपने लिए एक कार्यक्षेत्र चुन लेता था। मगर कालांतर में इसका स्वरूप जन्म आधारित हो गया। यहीं से इसने रूढ़ि या कुप्रथा का रूप धारण किया। जो व्यवस्था व्यक्ति की प्रतिभा एवं कौशल का सम्मान करने के बजाय जन्म के आधार पर किसी व्यक्ति का पूरा जीवन निर्धारित करती हो- उसे कहीं से मानवीय नहीं कहा जा सकता। अनेक विद्वानों की मान्यता है कि वैश्वीकरण से आर्थिक कारकों को प्रश्रय मिला है। व्यक्ति की आर्थिक स्थिति ही वैश्वीकरण के बाद के समाज में उसका सामाजिक ओहदा भी तय करेगी। अन्य शब्दों में सामाजिक जाति (social caste) के स्थान पर आर्थिक वर्ग (economic class) पैदा होंगे। इसे वैश्वीकरण के सकारात्मक प्रभाव के रूप में देखा जा सकता है।

भारत में स्त्री भी रूढ़ियों का शिकार रही है। उसे भी घर की चारदीवारी के भीतर कैद कर दिया गया, पर्दा-प्रथा की बेड़ियों में जकड़ दिया गया। उसे कमनीय कहा गया- पुरुष की कामना पूर्ति का एक साधन। उसे सम्पत्ति समझा गया अर्थात् व्यक्तित्व विहीन।

वैश्वीकरण के बाद स्त्री चारदीवारी के बाहर कम से कम खुली हवा में साँस लेने लगी है। उसे घर के बाहर आजीविका के लिए स्वतंत्रतापूर्वक काम करने का अवसर मिला है। इससे उसका आर्थिक सशक्तिकरण हुआ है। आर्थिक सशक्तिकरण ने सशक्तिकरण एवं स्वतंत्रता के अन्य आयामों को भी प्रभावित किया है। हालांकि यह स्वयं में चिंतनीय विषय है कि इस प्रक्रिया से स्त्री का व्यक्तित्व नहीं, देह सामने आया है।

प्रत्येक परम्परा अपने प्रारंभ के बिन्दु पर प्रासंगिकता होती है। मगर समय की धारा के साथ-साथ यह अपनी प्रासंगिकता खोने लगती है। और परम्परा रूढ़ि का रूप धारण कर लेती है और इस नकारात्मक रूप में वह समाज में बनी रहती है। उदाहरणार्थ भारतीय समाज अति धार्मिक एवं आस्थावादी समाज रहा है। इसके अनेक सकारात्मक असर भी इस समाज और संस्कृति पर पड़े हैं। लेकिन इसने धर्मभीरु एवं भाग्यवादी मानसिकता को भी जन्म दिया है। यह भाग्यवादी मानसिकता 'जाहि विधि राखे राम ताहि विधि रहिये' के रूप में प्रतिफलित होता है और व्यक्ति समस्याओं के निदान हेतु मानवीय कर्मठता की महत्ता को भूल जाता है। वह गुलाम है, उसे कोड़े पड़ते हैं, वह गरीब है, आम की गुठली के गूदे की रोटी खाता है, गूदा जहरीला निकला और वह मर भी गया। लेकिन सब पूर्व जन्म के कृत्यों का फल मान लिया जाता है। वैश्वीकरण के बाद आस्था के स्थान पर तर्क को प्रश्रय मिला है तथा तार्किक-वैज्ञानिक मानसिकता ने भाग्यवाद की तमाम जकड़नों को दूर करने में कहीं न कहीं सकारात्मक भूमिका निभाई है।

जैसा कि पहले कहा गया है कि भारतीय संस्कृति परोपकार की संस्कृति है। यह संस्कृति भूखे को रोटी खिलाना सबसे बड़ा धर्म मानती है। मगर यदि भौतिक विकास न हो तो न तो भूखे को रोटी खिलाई जा सकती है और न ही समाज में सामंजस्य स्थापित हो सकता है। क्योंकि भूख समस्त मानवीय मूल्यों को निगल जाने की क्षमता रखता है। इसलिए नैतिकता और परोपकार का तकाजा यह भी है कि आवश्यकता पूर्ण कर सकने योग्य भौतिक विकास भी हो।

वैश्वीकरण ने भौतिक विकास को प्रोत्साहित किया है। अतः इसके उचित समंजन से भारतीय संस्कृति के आधारभूत तत्व 'सर्वार्थ' को प्रोत्साहित भी किया जा सकता है।

वस्तुतः वैश्वीकरण से सभी संस्कृतियाँ एक-दूसरे के करीब आयी हैं। इसलिए एक संस्कृति का दूसरी संस्कृति पर प्रभाव पड़ना स्वाभाविक ही है।

संस्कृति विकास दो तरीके से होता है:

1. स्वतः स्फूर्त विकास,
2. बाह्य प्रभाव से विकास

दोनों तरीके से विकास होना चाहिए सांस्कृतिक स्वास्थ्य के लिए अच्छा ही नहीं अनिवार्य भी है। वैश्वीकरण की प्रक्रिया ने बाह्य प्रभाव द्वारा सांस्कृतिक विकास का अवसर उपलब्ध कराया है। मगर इस प्रक्रिया में बाजार और मीडिया की ताकत बहुत महत्वपूर्ण है। चूँकि बाजार और मीडिया की दृष्टि से पश्चिमी देश अधिक सशक्त हैं, इसलिए पश्चिमी संस्कृति का अन्य संस्कृतियों पर प्रभाव अधिक पड़ रहा है। वास्तव में यह प्रक्रिया अब संवाद न रहकर एकालाप बन गई है डायलॉग न रहकर मोनोलॉग बन गई है।

वस्तुतः वैश्वीकरण से अत्यधिक आतंकित हो जाना पूर्णतः अतार्किक हैं इस प्रक्रिया में सभी संस्कृतियों ने एक-दूसरे को प्रभावित किया है इसलिए पश्चिमी संस्कृति का भारतीय संस्कृति पर प्रभाव की ही बात करना एक तरफा विश्लेषण ही होगा।

वैश्वीकरण की प्रक्रिया में जिस संस्कृति का जो कमजोर पक्ष था उस पक्ष को अन्य संस्कृतियों ने प्रभावित किया है भौतिकता भारतीय संस्कृति का कमजोर पक्ष रहा है, इसलिए भौतिकता की दृष्टि से पश्चिमी संस्कृति ने भारतीय संस्कृति को प्रभावित किया है लेकिन आध्यात्मिकता पश्चिमी संस्कृति की दुखती रग है। स्पेंगलर ने 1922 की अपनी कृति 'The Decline of the West' में लिखा भी है कि प्रगति के समस्त सोपानों को तय करने के बाद भी आज का पश्चिम आध्यात्मिक रिक्तता के दंश को झेल रहा है। और इसी आध्यात्मिकता के बिन्दु पर भारतीय संस्कृति ने पश्चिमी संस्कृति पर गहरा प्रभाव डाला है। इसीलिए हम देखते हैं कि अमेरिका जैसे देश में रजनीशपुरम् नामक शहर बन जाता है। डॉ. विक्रम योगी विक्रम योग की स्थापना करते हैं। महेश योगी वैश्विक सरकार का गठन करते हैं। डॉ. दीपक चोपड़ा पश्चिम में जाकर भारतीय दर्शन और आयुर्वेद का प्रयोग करते हुए न केवल शरीर का बल्कि मन और आत्मा का इलाज करते फिरते हैं। हाउस ऑफ लाईस में दीपावली जैसा पर्व मनाया जाता है।

वैश्वीकरण हो, आधुनिकीकरण हो; इनके नाम पर पश्चिमी अंधानुकरण न हो। बाह्य तत्वों को ग्रहण करना चाहिए मगर इतना नहीं कि खुद की पहचान ही न बचे। परिवर्तन होना चाहिए, मगर इतना तीव्र नहीं कि परिवर्तन को आत्मसात् ही न किया जा सके। गाँधीजी ने भी कहा था कि खिड़कियाँ खुली रहें, मगर दरवाजे बंद रहे; हवाएं सभी ओर से आयें, मगर आंधी किसी ओर से न आए।

इकबाल ने लिखा है:-

**यूनान, मिश्र, रोमां, सब मिट गए जहाँ से
कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी।**

वस्तुतः भारतीय संस्कृति एक सामासिक संस्कृति है। अर्थात् तमाम तरह के विरोधाभासों को साथ लेकर चलने की क्षमता से युक्त संस्कृति है। इतिहास के झरोखे में झाँककर देखें तो शक आए, हूण आए, कुषाण आए, इस्लाम आया। मगर उनके आगमन से भारतीय संस्कृति किसी तरह क्षत-विक्षत नहीं हो गयी बल्कि दीर्घकालिक रूप से और भी समृद्ध होती चली गयी। इतिहास के इस अनुभव के आधार पर हम कह सकते हैं कि वैश्वीकरण की प्रक्रिया भी अंततः भारतीय संस्कृति को और भी समृद्ध एवं पुष्ट बनाएगा। हालांकि इन वाक्यों में आशा का स्वर ही झलकता है, लेकिन हमें यह भी याद रखना चाहिए कि आशा पर ही आकाश भी टिका है।